MAH/MUL/ 03051/2012 **ISSN :2319 9318**

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता™

April To June 2022
Issue 42, Vol-02

Date of Publication
01 April 2022

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
01 April 2022

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 8.14 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. CERTIFIED QUALITY MANAGEMENT SYSTEM ISO 9001:2015 International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

12. R. Cartner, R. Wojtkiewicz, Parental involvement with adolescents' education. Do daughter or sons get more help? Adolescence, 35(137), (29- 44), 2000.

13. B. F. Piko & M. A. Balazs, Control or involvement? Relationship between authoritative parenting style and adolescent depressive symptomatology, European Child & Adolescent Psychiatry, 21(3), 149-55. Doi:l0.1007/s00787- 012-0246-0, 2012.

14. Ames, Carole and Archer, Jennifer, Achievement goals in the classroom: Students' learning strategies and motivation processes, Journal of Educational Psychology, Vol 80(3), Sep 1998, 260-267. http://dx.doi.org/10. 1037/0022-0663.80 :3-260, 1998.

15. S. D. Arockia and P. N. Muthiah, Learning style and Academic performance of college students, Experiments in Education, vol.30, no.6, June 2002, pp.111-118.

⌘⌘⌘

38

छायावादी काव्य में प्रेम—वेदना

डॉ० रमेशकुमार टण्डन
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी),
शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खरसिया, छ.ग.
शोध निदेशक, हिन्दी,
शहीद नन्दकुमार पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़ छ.ग.

छायावाद के चारों आधार—स्तम्भ — जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रा नन्दन पन्त और महादेवी वर्मा ने व्यक्तिगत दु:ख, प्रेम, वेदना की अनुभूति को छायावाद की काव्यधारा में साकार किया है। प्रसाद ने आँसू पर पूरा काव्य ही लिख डाला। निराला ने मजदूर वर्ग की पीड़ा को अपना मानकर शब्द दिया। जब उनकी युवा विवाह योग्य पुत्री असमय काल के मुँह में समा जाती है जब 'सरोज स्मृति' के रूप में हिन्दी पाठकों को वह काव्य रूला जाता है। पन्त जी ग्रन्थि में जिस प्रणयिनी के ग्रन्थि बन्धन की बात कहते हैं, यह भी सम्भवत: कभी कोई जान न सका। वेदना—भाव, महादेवी की कविता का धर्म ही बन गया। 'नीहार' से 'दीपशिखा' तक महादेवी की विरह—वेदना चरमोत्कर्ष को पाती रही।

कूट शब्द — ''छायावाद के आधार—स्तम्भों में स्वकीय वेदना का विराट—फलक''

जयशंकर प्रसाद —

जब द्विवेदी युग में कविता स्वानुभूति परक न होकर इतिवृत्तात्मकता की ओर मुड़ने लगी और रागात्मक साहित्य के प्रमुख गुण 'वैयक्तिकता' से विमुख होने लगी, तब सौंदर्यप्रेमी जयशंकर प्रसाद ने अनुभूतिप्रवण कल्पना संबंधी उच्च कोटि के काव्य के साथ हिन्दी साहित्य काव्य जगत में अपनी प्रबल उपस्थिति दी। **'प्रेम पथिक'** में कवि ने स्वानुभूति प्रेम का उदात्त

चित्रण किया है। श्री रामनाथ सुमन लिखते हैं, ''यह काव्य हिन्दी संसार में एक नूतन संन्देश लेकर आया। इसमें वियोग है, व्यथा है; किन्तु रुपजन्य मोह के ऊपर उठने की चेष्टा भी है। यह उस प्रेम की ओर ले जाना चाहता है, जहाँ स्वार्थ और कामनाओं को छोड़कर आत्मोत्सर्ग की साधना चल रही है, जहाँ प्रेम सृष्टि की सर्वोत्तम देन है; जहाँ वह प्रभु का स्वरूप धारण करता है और जहाँ प्रेम की कसौटी — अपने अस्तित्व को मिटा देना है।'' किशोरावस्था से यौवन तक कवि ने जिस वेदना का अनुभव किया, वह **'आँसू'** काव्य के रूप में पाठकों को भी रूलाया —

''जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति—सी छाई।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।।''

इस काव्य में विरहदग्ध हृदय के उद्‌गारों की मार्मिक व्यथा की अभिव्यंजना हुई है। प्रसाद जी अपनी प्रेमिका के लिए रोते, कलपते और आँसू बहाते हैं, किन्तु लोक इस ज्ञान से सर्वथा वंचित ही है कि वह सौभाग्यवती प्रेमिका कौन है जो प्रसाद जैसे सहृदय व्यक्ति की प्रेमिका बनने का सौभाग्य प्राप्त न कर सकी। **'लहर'** में प्रकृति के सुन्दर चित्र के साथ—साथ, विरह और मिलन, भोग और त्याग का चित्रण मिलता है—

''चिर—तृशित कंठ से तृप्ति—विधुर
व्ह कौन अकिंचन अति आतुर
अत्यन्त तिरस्कृत अर्थ—सदृश
ध्वनि कंपित करता बार—बार
धीरे से वह उठता पुकार —
मुझको न मिला रे कभी प्यार।''

प्रसाद की **'कामायनी'** में एक ओर श्रद्धा के रूप में त्याग, स्नेह, दया, सहिष्णुता आदि नारीसुलभ उदात्त गुण दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर ईड़ा के रूप में एक स्वार्थपरायण, बुद्धिवादी और व्यवहार कुशल नारी पाठकों के समक्ष आती है। इसमें प्रसाद की दुःखानुभूति, सुखानुभूति, मनु और श्रद्धा के द्वारा फूट पड़ी है। प्रसाद की सुख संबंधी सहानुभूति के दर्शन चिंता तथा आशा सर्ग में होता है। इन सर्गों में मनु के द्वारा वर्णित जीवन की विषमता एवं कटुता के दर्शन मिलते हैं। श्रद्धा सर्ग में मनु की व्यथा, पूर्ण निराशा की स्थिति तथा श्रद्धा के आशापूर्ण संदेश एवं ईड़ा सर्ग में मनु के निजी दुःख आदि को बताया गया है। लज्जा का हृदयग्राही चित्र इस प्रकार देखने को मिलता है —

''छूने में हिचक देखने में,
पलकें आँखों पर झुकती हैं;
कलरव परिहास भरी गूँजें,
अधरों तक सहसा रूकती हैं।
संकेत कर रही रोमाली,
चुपचाप लरजती खड़ी रही;
भाषा बन भौहों की काली,
रेखा—सी भ्रम में पड़ी रही।''

मनु के प्रति श्रद्धा के हृदय में रतिभाव जागश्त होने का भाव निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है —

''गिर रही पलकें, झुकी थी नासिका की नोक;
भ्रूलता थी कान तक चढ़ती रही बेरोक।
स्पर्श करने लगी लज्जा, ललित कर्ण कपोल;
खिला पुलक कदम्ब—सा था भरा गदगद बोल।''

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला —

निराला की वेदना मजदूर वर्ग को लेकर सामने आती है। **'भिक्षुक'** और **'तोड़ती पत्थर'** में कवि के द्वारा अंकित चित्र अत्यन्त मर्मस्पर्शी बन पड़ा है। भिक्षुक में कवि कहते हैं —

''वह आता —
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता
पेट—पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्‌ठी—भर दाने को, भूख मिटाने को मुँह
फटी—पुरानी झोली को फैलाता,
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।''
''चाट रहे जूठी पत्तल वे, कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे, कुत्ते भी हैं अड़े हुए।''

'तोड़ती पत्थर' में भी इसी प्रकार की वेदना दिखाई देती है —

''वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर —
वह तोड़ती पत्थर।''
''चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन,

दिवा का तमतमाता रूप,
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।''

निराला की पुत्री 'सरोज' महज १८ वर्श की अवस्था में मृत्यु की गोद में समा गई। इस पर दुखी होकर पिता कवि ने सरोज के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटना को स्मृति के रूप में आँसुओं से भिगोकर साहित्य जगत में पिरोया है। **'सरोज स्मृति'** की कुछ पंक्तियाँ —

''धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित—काय।
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ—समर।''
''इससे पहिले आत्मीय स्वजन,
सस्नेह कह चुके थे जीवन।
सुखमय होगा, विवाह कर लो,
जो पढ़ी—लिखी हो, सुन्दर हो।
आए ऐसे अनेक परिणय,
पर विदा किए मैंने सविनय।

सुमित्रानन्दन पन्त —

'ग्रंन्थि' में कवि का यौवन हिलोर लेने लगता है। प्रणय में असफलता मिलने के फलस्वरूप ही कवि विरह गीत के रूप में 'ग्रंन्थि' की रचना करते हैं। पन्त जी ग्रन्थि में जिस प्रणयिनी के ग्रन्थि बन्धन की बात कहते हैं, यह भी सम्भवतः कभी कोई जान न सका। **'पल्लव',** पन्त के छायावादी काव्य की प्रौढ़तम रचनाओं में से एक है। इसमें कवि, यौवन के प्रणयगीत के मध्य प्रकृति के विराट् क्षेत्र में प्रवेश करता है और उसकी कल्पना मुखरित हो उठती है। 'ग्रंन्थि', आँसू की बालिका' इत्यादि कविताओं में कवि के स्वकीय प्रेम की अभिव्यंजना होती है, साथ ही वियोग वेदना के उद्दीपन के रूप में प्रकृति का भी उल्लेख मिलता है —

''धधकती है जलदों से ज्वाल, बन गया नीलम व्योम प्रबाल।
आज सोने का सन्ध्या काल, जल रहा जनु गश्ह सा विकराल।।
चिनगियों से तारों को डाल, आग सा अंगार शशिलाल।
लहकता है फैला मणिजाल, जगत को डसता है तम काल।।

महादेवी वर्मा —

वेदना—भाव महादेवी की कविता का धर्म बन गया। इनकी विरह—वेदना पूर्वराग विप्रलम्भ के अन्तर्गत आती है। प्रियतम हल्की—सी झलक दिखाकर चला गया और उसके परिणामस्वरूप कवयित्री का मन मधुमय पीड़ा में डूबकर रह गया। वह निष्ठुर व्यक्ति कौन है, जिसने उस समय जबकि महादेवी वर्मा की ललचाई आँखें ब्रीड़ावश प्रियतम को भलीभांति देख भी न सकती थीं, उन्हें पीड़ा का साम्राज्य प्रदान कर दिया —

''इन ललचाई आँखों पर
पहरा था जब ब्रीड़ा का,
साम्राज्य मुझे दे डाला
उस चितवन ने पीड़ा का।''

डॉ० नगेन्द्र कहते हैं, ''महादेवी का एकाकी जीवन ही उनके वेदनाभाव का मूल प्रेरक है। निस्संदेह इन्हें दुःख का आधिक्य किसी अभाव के कारण ही मिला है। किसी प्रिय वस्तु के अभाव के कारण ही ये 'नीर भरी दुःख की बदली' बन गई। विफल प्रेम और मर्म प्रभाव ही महादेवी की कविता में सर्वत्र प्रतिध्वनित हो रहा है। हो सकता है जीवन की मधुमय बेला में प्रियतम का त्याग ही इसका कारण रहा हो।'' अपनी प्रथम कृति **'नीहार'** के संबंध में महादेवी लिखती हैं कि 'नीहार' के रचना काल में मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कौतूहल मयी वेदना उमड़ आती थी, जैसी बालक के मन में दूर दिखाई देने वाली अप्राप्य सुनहली उशा और स्पर्श से दूर और सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है।'' कवयित्री के लाज के बोल भी नहीं फूटे थे, प्रियतम के स्वरूप का बोध भी नहीं हुआ था; इस दशा में वियोग की पराकाश्ठा पर पहुँचकर कवयित्री को पूरा विश्व वेदनामय प्रतीत होने लगा था—

''अपने इस सूनेपन की
मैं हूँ रानी मतवाली,
प्राणों का दीप जलाकर

करती रहती दीवाली।''

प्रथम कृति **'नीहार'** में प्रत्येक वस्तु कुहासे से ढकी होने के कारण धूमिल और अस्पष्ट होती है। किन्तु प्रात:काल हो जाने से **'रश्मि'** के प्रकाश में वही वस्तु प्रकट हो जाती है। इस कृति में कवयित्री को वेदना से विशेष आत्मीयता हो जाती है। रश्मि तक आते—आते विरह—वेदना ही कवयित्री का अंतिम लक्ष्य बन जाती है। 'रश्मि' के बाद की दो कृतियों — **'नीरजा'** और 'सांध्यगीत' का स्वर एक जैसा है। इनमें वेदना से आनन्द की अनुभूति होने लगती है। कवयित्री दु:ख के रूप में ही प्रियतम का आह्वान कर रही है —

''तुम दु:ख बन इस पथ से आना ?
शूलों में नित मृदु पाटल—सा, खिलने देना मेरा जीवन,
क्या हार बनेगा वह, जिसने सीखा हृदय को बिंधवाना।''

महादेवी ने वेदना को आनन्द से सर्वथा ऊँचा स्थान दिया है। **'सांध्यगीत'** में महादेवी का साथी केवल अन्धेरा ही है —

''शून्य मेरा जन्म था, अवसान है केवल सवेरा।''

इसमें महादेवी की विचारधारा को एक नई दिशा मिल गई है। प्रियतम के साथ तन्मयता ही उसकी दार्शनिक परिणति है और आत्मविश्वास तथा विरह वेदना की दृढ़ता ही उसका संबल है। **'दीपशिखा'** में अद्वैतता तथा विश्वास का और निखार हो गया। पीड़ा की ज्वाला ही दीपशिखा बन गई। इसमें दु:ख अपना दर्शन खोजकर सुख को आत्म समर्पण कर बैठा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

१. डॉ० रामसागर त्रिपाठी, डॉ० शान्तिस्परूप गुप्त; बृहत् साहित्यिक निबन्ध; अशोक प्रकाशन दिल्ली, १९८८ ई०।
२. जयशंकर प्रसाद, आँसू।
३. जयशंकर प्रसाद, लहर।
४. जयशंकर प्रसाद, कामायनी।
५. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, भिक्षुक।
६. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, तोड़ती पत्थर।
७. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सरोज स्मृति।
८. महादेवी वर्मा, नीरजा।
९. महादेवी वर्मा, सांध्यगीत।

39

शिवनारायण सिंह की बोधकथाओं में व्यावहारिक जीवन—दृष्टि

सुशील कुमार तिवारी
सहा.प्राध्यापक (हिन्दी),
शास. विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मनेन्द्रगढ, छ.ग.

डॉ.(श्रीमती) हरिणी रानी आगर
सहा.प्राध्यापक (हिन्दी),
शास. बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बिलासपुर, छ.ग.

संक्षेपिका— साहित्य का उद्देश्य व्यक्ति में सच्चरित्र एवं अच्छे संस्कारों का विकास करना है। चरित्र एवं संस्कार निर्माण की यह प्रक्रिया वैसे तो जीवन भर चलती रहती है, किन्तु जिस उम्र में व्यक्ति के चेतना निर्माण की शुरूआत होती है, यदि उसी उम्र में साहित्य की रुचि पैदा कर दी जाय तो अत्यन्त सुखद अनुभव होता है। कथाएँ लोकसाहित्य एवं साहित्य का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये प्रेरक होने के साथ—साथ किसी को स्वयं का साक्षात्कार कराने में भी सहायक होती हैं जीवन के सर्वांगीण विकास का अमृत तत्व इनमें छलकता है। छोटी—छोटी कहानियों और बोधकथाओं ने पूरी दुनिया के सैकड़ों महापुरुषों के जीवन को प्रेरणा देकर सार्थक बनाया है। बालकों और किशोरों के मन पर कथाएँ जीवन का संस्कार करती हैं, उन्हें रास्ता दिखाती हैं। संस्कार चाहे देशप्रेम के हों, चाहे मानव सेवा के, ईश्वर की भक्ति के हों या किसी विद्या की साधना के, पूरे जीवन हमारी कठिनाइयों के बीच आत्मविश्वास भरने का काम करते हैं। अगर ये संस्कार हमें परिवार से विरासत के रूप में या स्कूल के शिक्षक से मिले हों तो वे दिल और दिमाग में गहराई